

चातक पुं. (तत्.) पपीहा, एक पक्षी जो केवल वर्षाकाल में 'पी-पी' कर बोलता है वि. वर्षाकाल के स्वाति नक्षत्र में ही अपनी चोंच में आए जल को पीकर वर्ष भर जीवित रहता है, ऐसा कवि समय में मिलता है।

चातकनी स्त्री. (तद्.) चातकी, पपीहरी।

चातकानंदन पुं. (तत्.) चातकों को प्रसन्न करने या खुशी देने वाला, वर्षाकाल 2. बादल।

चातर वि. (देश.) दे. चातुर और चतुर।

चातुमसि पुं. (तत्.) दे. चातुमास।

चातुर वि. (देश.) 1. दृश्यमान 2. चतुर 3. खुशामदी 4. गोल तकिया (मसनद) 5. चार, चौथा 6. चार पहिये की गाड़ी।

चातुरक्ष पुं. (तत्.) चार पासों का खेल 2. छोटा गोल तकिया।

चातुरता वि. (तद्.) दे. चतुरता।

चातुरमास (चातुर्मास) पुं. (तद्.) आषाढ़ शुक्ल एकादशी से लेकर कार्तिक शुक्ल एकादशी तक-चार माह की अवधि (वर्षाकाल का समय), तु. बरसाती वि. चातुर्मासिक चार महिनो में होने वाला, वैदिक यज्ञ, कर्म आदि, चार माह का -चातुर्मास्य पुं. (तत्.) चार महीनों में होने वाला वैदिक यज्ञ।

चातुराई स्त्री. (देश.) दे. चतुराई।

चातुरिक पुं. (तत्.) सारथी, रथवान, गाड़ीवान।

चातुरी स्त्री. (तत्.) चातुर्य, चतुराई, चतुरता, निपुणता।

चातुर्जति (चातुर्जतिक) पुं. (तत्.) 1. आयुर्वेद के भावप्रकाश निघंटु ग्रंथ के अनुसार चार सुगंध-द्रव्य- नागकेसर, इलायची, तेजपात और दालचीनी आदि का मिश्रण 2. गुजरात के प्राचीन राजाओं के प्रधान कर्मचारी की उपाधि, प्रशासक।

चातुर्यक वि. (तत्.) चौथे दिन आने वाला ज्वर, चौकिया या चौथिया बुखार, चातुर्यिक।

चातुर्दशिक वि. (तत्.) चतुर्दशी की तिथि से विद्या आरंभ करने वाला 2. चतुर्दशी तिथि को होने वाला कार्य।

चातुर्भद्रक पुं. (तत्.) 1. चार पदार्थ- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष 2. वैद्यक के अनुसार ये चार औषधियाँ- पीपल, नागरमोथा, अतीस, काकड़ासिंगी 3. गिलोय, नागरमोथा, अतिविधा एवं मुस्ता, इन चार बूटियों के संयोग का संयुक्त नाम।

चातुर्भद्रावलेह पुं. (तत्.) आयुर्वेद के अनुसार पीपल, जायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी को एक साथ कूट कर तथा पीस कर बनाया गया अवलेह।

चातुर्मासिक वि. (तत्.) चार महीनों की अवधि तक चलने वाला व्रत, यज्ञ, कर्म आदि।

चातुर्मासी स्त्री. (तत्.) पौर्णमासी (पूर्णमासी)।

चातुर्मास्य पुं. (तत्.) 1. चौमासा 2. चार महीनों में होने वाला यज्ञ 3. चार महीनों में होने वाला अनुष्ठान या यज्ञ आदि जो वर्षाकाल में होता है।

चातुर्य पुं. (तत्.) चतुराई, निपुणता, दक्षता, कुशलता, कौशल।

चातुर्वर्ण्य पुं. (तत्.) 1. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र चारों वर्णों के होने की स्थिति 2. चार वर्णों द्वारा करने योग्य आचरण तथा धर्म, जैसे ब्राह्मण का कर्म यज्ञ, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान तथा प्रतिग्रह।

चातुर्विद्य पुं. (तत्.) 1. चारों वेदों का ज्ञाता 2. चारों वेदों के होने की स्थिति।

चातुर्होत्र पुं. (तत्.) वह यज्ञ जो चार होताओं द्वारा संपन्न हो।

चात्र पुं. (तत्.) अग्निमंथन-यंत्र का एक अवयव वि. यह बारह अंगुल की खैर की लकड़ी होती है जिसके अगले छोर में लोहे की एक कील लगी होती है और पीछे की ओर छेद होता है।

चात्रक पुं. (तत्.) दे. चातक।

चात्रिक पुं. (तत्.) दे. चातक।

चादर स्त्री. (फा.) 1. कपड़े का लंबा-चौड़ा टुकड़ा जो बिछाने एवं ओढ़ने के काम में आता है 2. चौड़ा तथा बड़ा दुपट्टा, हल्का ओढ़ना मुहा. चादर उतारना- बेपर्दा करना अर्थात् इज्जत उतारना;